टेम्स की

सरगम

संतोष श्रीवास्तव

उपन्यास

टेम्स की सरगम

संतोष श्रीवास्तव

असरदार तारीख़ों से गुज़र जाना

बीसवीं सदी के अंग्रेजों की गुलामी के कुछ दशक भारतीय मंच पर तमाम ऐसी घटनाओं को फोकस करने में लगे रहे जिससे सम्पूर्ण जनमानस जागा और गुलामी के कलंक को माथे से मिटाने में जुट गया। आजादी का प्रयास इतना, महत्वपूर्ण हो उठा था कि तमाम धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक असमानताएँ भूल बस संघर्ष की आँच में कूद पड़ने का जनमानस बन चुका था। एकबारगी धर्म, साहित्य, कला (संगीत, नृत्य, चित्रकला) से जुड़े लोग भी कुछ ऐसी ही मानसिकता बना खुद को उसमें झौंकने को तत्पर थे। बीसवीं सदी की शुरूआत के वे चार दशक मैंने बड़ी बारीकी से पढ़े थे और उस वक्त की परिस्थितियों ने मेरे मन में अन्य किसी भी काल के इतिहास से अधिक जगह बना ली थी। मैं साहित्य में उतरी, फिल्मों को खँगाला, संगीत, चित्रकला और नाट्यकला के द्वार खटखटाए और इतनी असरदार तारीख़ों से गुज़री कि मुझे लगा अगर इन तारीखों पे मैंने नहीं लिखा तो मन की उथलपुथल कभी शांत नहीं हो सकती। मैंने आजादी के लिए सुलगते उन दशकों में एक प्रेम कहानी ढूँढी और खुद को उसमें ढालने लगी। यदि खुद को नहीं ढालती तो शायद न घटनाएँ सूझतीं, न शब्द.....। पूरे विश्व को अपने सम्मोहन में बाँधे भगवान कृष्ण को भी मुझे उन दशकों में जोड़ना था। अपनी विदेश यात्राओं के दौरान मैंने वहाँ कृष्ण के विराट रूप को इस्कॉन के जरिए जीवंत होते देखा और बड़ी मेहनत से उस काल को इस काल तक जोड़ने की कोशिश की। सात वर्षों की मेरी अथक मेहनत, शोध.....एक-एक पेज को बार-बार लिखने की धुन और हेमंत के शेष हो जाने के शून्य में खुद को खपाना....बहुत मुश्किल था ऐसा होना पर मैं कर सकी। अक्सर उसका भोला चेहरा कभी दाएँ से झाँकता, कभी बाएँ से.....''माँ, कलम मत रोको, लिखो न.....ओर मैं जैसे जादू से बँधी बस लिखती चली जाती...तो मैं कह सकती हूँ कि हेमंत ने यह उपन्यास मेरी यादों में घुसपैठ कर मुझसे लिखवाया।

मेरी छोटी बहन कथाकार प्रमिला वर्मा ने हर अध्याय के बाद मेरे अन्दर आत्मविश्वास जगाया और मेरे रचनात्मक श्रम को सहलाया, आगे बढ़ाया।

मेरी अभिन्न मित्र कथाकार सुधा अरोड़ा ने मेरी इस रचना को नाम दिया ''टेम्स की सरगम''। वे कई दिनों तक इसके शीर्षक पर विचार करती रहीं.....। यह मेरी लिए ऐसी खुराक थी जिसने मेरे दिमाग को बड़ी राहत दी।

इस उपन्यास के रचना समय के दौरान तमाम आवश्यक अनावश्यक परिस्थितियों को खारिज करते हुए मैंने खुद को समेट कर रखा और इसके हर पात्र हर घटना को जीती रही। चाहती हूँ मेरी आवाज़ उन तक पहुँचे जो जिन्दगी और प्रकृति के जरूरी तत्व प्रेम को भूलकर मात्र अपने लिए जी रहे हैं। और मनुष्यता को ख़त्म कर रहे हैं।

संतोष श्रीवास्तव

टेम्स की सरगम

1

उस समय जब रातें ठण्डी और लम्बी थीं, रोशनी की तमाम शहतीरें, परछाइयाँ, चोट खाए पंछी-सी डैने फड़फड़ाती धरती पर बिछ गई थीं, डायना ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के उच्च पदाधिकारी अपने पति टॉम ब्लेयर के साथ भारत के कलकत्ता शहर में कदम रखा और उसे लगा कि भारत की यह धरती, यह शहर, सड़कें, उद्यान, पेड़-पौधे, नदी, पर्वत उसके अपने हैं...जैसे वह सदियाँ गुज़ार चुकी है यहाँ। कहीं अजनबियत नहीं जबकि लंदन से जब वह पानी के जहाज पर सवार हुई थी तो एक उदासी ने घेर लिया था उसे। वह एक ऐसी जगह जा रही है जहाँ कोई उसका अपना नहीं। अपना शहर, अपनी आलीशन कोठी, नौकर चाकर छोड़ते हुए उसका मन असुरक्षा की भावना से भर उठा था। वह अकेली डेक पर खड़ी अंधेरे में समन्दर की काली लहरों की भयंकरता देख रही थी और टॉम अपने अंग्रेज़ साथियों के साथ जहाज़ में अंदर किसी केबिन में शराब पार्टी में मगन था। न जाने कितना रहना पड़े हिन्दुस्तान में। इधर उसके पिता का करोड़ों का व्यापार है जिसकी जिम्मेवारी उस पर है। व्यापार को आगे बढ़ाना अब मुमकिन नहीं क्योंकि न पिता रहे न माँ.....उनकी एकमात्र संतान सिर्फ वह। क्या करेगी व्यापार बढ़ाकर। जितनी चल, अचल संपत्ति है उसी को सहेजना मुश्किल है। जब टॉम की ईस्ट इंडिया कंपनी में नियुक्ति थी....लंदन से चलते समय डायना ने सोचा भी न था कि अपना देश छोड़ते हुए कैसा रीतापन घेर लेता है और यूँ लगता है कि मात्र शरीर जा रहा है..... जान तो यहीं छूटी जा रही है पर ज्योंही जहाज़ ने हिन्दुस्तान के समुद्री तट पर लंगर डाला वह देश की सीमाएँ भूल गई और उसे लगा जैसे एक मोहल्ले से चलकर दूसरे मोहल्ले ही तो आई है वह।

अंग्रेजों के शानदार बंगलों में से एक बंगला टॉम ब्लेयर को एलॉट किया गया था। बिल्कुल अछूता इलाका जहाँ सिर्फ अंग्रेज रहते थे। हिन्दुस्तानियों के लिए ब्लैक टाउन था....कालों का काला इलाका...इस बात का टॉम को बहुत घमंड था। वह उन्हें गुलाम कहता। काले गुलाम। उनके बंगले में भी एक काला गुलाम नौकर था बोनोमाली। वह संथाल की ओड़ाओ जाति का युवक था। जिस्म आबनूस-सा काला। आँखें पीली। उन आँखों में करूणा का सागर लहराता था। अपने खाली वक्त में वह अपने इकतारे पर बाउल गीत गाता था। बंगले में खाना पकाने के लिए पार्वती थी जिसे सब पारो कहा करते थे। मँझोले कद की साँवली बंगालिन। कलाइयों में सफेद शाँखा, कड़ा। मांग में सिंदूर और लम्बे काले बालों का ढीला-सा जूड़ा। वह खाना बहुत लज्जतदार बनाती थी। भारतीय, मुगलाई, राजस्थानी और अब तो विलायती खाना बनाना भी सीख गई थी वह। टॉम के शानदार बंगले के शानदार बगीचे को अधेड़ उम्र का माली सँभालता था। ड्राइवर मोटर या जीप की सीट पर बैठा हुकुम का इंतजार करता रहता था। अपने सेवकों की भीड़ से घिरा रहता था टॉम लेकिन डायना विनम्र थी। सीधी सरल...प्रेम से ओतप्रोत। न उसे अपने रूप सौंदर्य का अभिमान था न दौलत का। संगीत, पुस्तकें, देशाटन यही उसके शौक थे। वह बोनोमाली के बाउल गीतों की दीवानी हो गई थी। जब वह इकतारा बजाकर गीत गाता तो ऐसा लगता जैसे कई भ्रमर एक साथ गुनगुन कर रहे हों और उनका गुंजन शरीर में

डूब-डूब जाने वाला रस पैदा कर मथ डालता था हृदय को। उसके गीतों को डायना चाहे जब सुनने लगती। बोनोमाली भी गीत सुनाने के मौके तलाशता रहता। उसे पता चल गया था कि उसकी मालकिन को संगीत का शौक है।

''मैं आपको चंडीदास से मिलवाऊँगा मेमसाहब। उन्होंने शांतिनिकेतन से संगीत सीखा है। उनके गीतों में नदी की धार मोड़ देने की ताकत है।''

''अच्छाऽऽ।'' चकित थी डायना संगीत के जादू से .....नदी की धार क्या, यहाँ तो संगीत के जादू से बुझते दीप जल जाते हैं, मेघ जल बरसा देते हैं और हिरन चौकड़ी भरना भूल ठगे से खड़े रह जाते हैं। रहस्यों से भरा है भारत....धर्म, दर्शन, साहित्य, संगीत, कला....पत्थरों में जान डाल देने की अद्भुत शक्ति से समृद्ध है भारत। पिता के घर असीमित संपत्ति का भोग करते हुए भी विरक्त मन की मालकिन थी वह। दुनिया जहान की किताबें पढ़-पढ़ कर ज्ञान तो बढ़ा लेकिन उससे कहीं अधिक बेचैनी बढ़ गई। उसके मन में सदैव प्रश्न मंडराते रहते। आकाश, तारे, चाँद, सूर्य क्यों हैं? सुबह, शाम, रात क्यों होती हैं? मरने के बाद हम कहाँ जाते हैं? क्या हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार यह सच है कि आत्मा पुनः शरीर धारणा करती हैं? जब अपने इन तर्कों का समाधान वह नहीं पाती तो फिटन पर सवार निकल पड़ती कलकत्ते की सड़कों पर।

फिटन चौरंगी से गुज़रती जहाँ बड़ी कलात्मक इमारतें थीं। अंग्रेजों के टाउन हाउस थे... शानदार ऊँची बुर्जियों, बड़े-बड़े खिड़की दरवाजोंदार....फाटक खोलते ही बाँस के पेड़ों का सघन झुरमुट....सफेद पींड़ वाले यूकेलिप्टस और घास के लॉन में झरी उनकी सूखी, भूरी, नुकीली पत्तियाँ एक अजीब-सा एहसास करातीं। फैलते अंधेरे में जब कोई मोटर या जीप वहाँ से गुजरती तो हैडलाइट्स में झुरमुट की छायाएँ बंगलों की दीवार पर सरकती हुई गायब हो जातीं।

फिटन नदी के किनारे की सड़क पर दौड़ती। वहाँ भी अमीर अंग्रेजों के गार्डन हाउस थे... जहाँ काले गुलाम मालीगिरी करते थे। अंग्रेजों की कोठियों के पीछे इन गुलामों के लिए सर्वेंट क्वार्टर थे। बगीचे में छोटे-छोटे पुकुर और पुकुर में खिले सफेद गुलाबी कमल के फूल। एक ओर अंग्रेजों के शासन की शानदार समृद्धि थी। और दूसरी ओर भारत की अद्भुत सौन्दर्यशाली प्रकृति और तमाम रहस्य....उन रहस्यों को परत दर परत खोलना चाहती थी डायना। भारत में घी दूध की नदियाँ बहती थीं। महलों, मंदिरों के दरवाजों पर हीरे, मोती, नीलम, पन्ना जड़े थे और इंग्लैंड इस कामधेनु का दोहन कर रहा था। वहाँ समृद्धि की नीवें मज़बूत हो रही थीं। अमीर और अमीर हो रहे थे। गरीब अमीरी की तरफ बढ़ चुके थे। भारत से पाए धन के ढेर पर खड़ा था इंग्लैंड जहाँ उसका झंडा लहरा रहा था। पर इन बातों से अगर डायना को तकलीफ भी होती है तो उससे क्या? इसीलिए डायना ने इन फिजूल की बातों को सोचना बंद कर दिया था। उसे तो भारत के अद्भुत किस्से बेचैन किए हुए थे। कैसी अद्भुत बात है कि सीता राजा जनक को खेत के अंदर जमीन से निकले एक घड़े में मिलीं...रावण के दस सिर थे, कुंभकर्ण छः महीने सोता था और छः महीने जागता था.....दशरथ की तीन पत्नियों को यज्ञ की अग्नि से निकले खीर के कटोरे से खीर खाकर पुत्र हुए और कुंती ने बिना पति के समागम के मंत्र पढ़-पढ़कर तीन पुत्र पैदा किए और उसी तरह माद्री ने दो पुत्र पैदा किए.....असंभव.....डायना चकरा जाती। जहाँ एक ओर त्रेता युग उसे भूलभुलैयों के जंगल में भटका देता वहीं द्वापर युग के कृष्ण...ओह, लॉर्ड कृष्ण। सोलह कलाओं से पूर्ण लीला पुरूष कृष्ण.....अद्भुत व्यक्तित्व। कृष्ण को जानना है तो डायना को हिन्दी और संस्कृत सीखना होगा।

बंगले के सामने फिटन से उतरते हुए डायना की नजर बगीचे में खिले रातरानी के फूलों पर गई। दोपहर ढलते ही रातरानी की कलियाँ खिल जाती हैं और हवाएँ महक उठती हैं। मौसम की दीवानगी में भी वह तनहा-सा महसूस करती है। जब से शादी हुई है... टॉम ने उसे कभी न तो प्यार से देखा... न दो बोल प्रेम के कहे। वैसे भी वह महीने के

पंद्रह दिन तो टूर पर ही रहता है और बाकी के दिन में क्लब, बाल रूम्ज, दोस्तों के संग शराब, सिनेमा में गुज़ारता है। घर में उसकी मौजूदगी भी कभी डायना की तनहाई दूर नहीं कर पाई। तनहा अकेलेपन की छाया के संग जीना सीख लिया है उसने क्योंकि यह छाया न तो मिटती है न उसका पीछा छोड़ती है।

साँझ फूली थी और उसके खुशनुमा रंगों से चमत्कृत डायना अद्भुत प्रकृति में लीन थी कि तभी गेट खुलने की आवाज़ के साथ ही आदतन डायना ने कलाई में बँधी घड़ी देखी और अपने पर ही हँस दी-''अरे, टॉम तो आसाम गया है... मैं भी बस.....।''

लेकिन तभी बोनोमाली चंडीदास को लेकर हाज़िर हुआ। डायना चंडीदास को देखती ही रह गई। साँवले रंग के, ऊँचे कद के तराशे हुए नाक-नक्श और बड़ी-बड़ी काली आँखों वाले आकर्षक युवक का नाम बोनोमाली ने चंडीदास बताया। उसकी आँखों में विद्वत्ता अलग से झलक रही थी। हाथ जोड़कर नमस्ते करके चंडीदास लॉन पर खड़ा हो गया।

''इन्हें हॉल में ले चलो बोनोमाली।'' कहती हुई डायना जैसे खुद ही उसे अंदर लिवा लाई।

''बैठिए, सोफे पर बैठिए।'' चंडीदास के बैठते ही बोनोमाली पानी ले आया। चंडीदास देख रहा था, एक आला अंग्रेज अफ़सर के आलीशान ड्रॉइंग रूम को....दीवारों पर टँगी पेंटिग्ज और फूलों की साज-सज्जा उनके कला के प्रति रुझान को स्पष्ट बता रही थी। कहीं बारहसिंगा, शेर, चीते का सिर नहीं था जो कि अक्सर समृद्ध घरों की दीवारों पर उनकी बहादुरी को प्रदर्शित करता है। जानवरों से प्रेम था ब्लेयर दंपति को। सोचा चंडीदास ने और स्वयं को बहुत अदना-सा समझने लगा। लेकिन... नहीं, कला की कद्र करना डायना के खून में बसा था। चंडीदास बचपन से संगीत की साधना में रत था। उसकी गायकी में निखार आया शांतिनिकेतन से। निम्न मध्यम वर्ग के परिवार में वह अपने माँ-बाप का इकलौता बेटा था। दो बहनें... दोनों उससे छोटी। माँ बाप की सारी आस चंडीदास पर लगी थी। पढ़-लिखकर वह स्कूल में पढ़ाता था और समय निकालकर संगीत साधना किया करता था। संथालियों की तरह इकतारे पर वह ऐसे-ऐसे बाउल गीत गाता था कि वक्त मानो ठहर-सा जाता था। चंडीदास ने डायना की तरफ गौर किया....पल भर को वह चकित हुआ कि अब तक उसकी पारखी नज़रों ने कैसे नहीं परखा कि सामने बैठी खूबसूरत औरत के चेहरे पर शालीनता, सौम्यता और सरलता साफ़ दिखाई देती है।

''मिस्टर चंडीदास, आप मुझे संगीत सिखाएँगे?'' डायना ने अपनी नीली चमकीली आँखें उसके चहरे पर टिका दीं। वह उनकी आँखों की गहराइयों में डूब गया।

''मैं बांग्ला, हिन्दी और संस्कृत भाषा भी सीखना चाहती हूँ और बांग्ला संगीत भी।''

चंडीदास आश्चर्य से इस विदेशी औरत के अपने देश की भाषाओं के प्रति लगाव को देख रहा था। जैसे उसकी जबान डायना के आगे मूक हो चुकी थी। ऐसे में जबकि अंग्रेजों के भारतीयों पर अत्याचार अपने चरम पर थे क्योंकि इस देश के नागरिक अब आजादी चाहते थे। अंग्रेज उन्हें आपस में लड़वा रहे थें साम्प्रदायिकता का विष बीज बो रहे, ईसाई मिशनरियाँ स्थापित की जा रही थीं और शूद्र वर्ग को बरगला कर धर्म परिवर्तन कराए जा रहे थे... एक अंग्रेज औरत चंडीदास से इस देश के साहित्य, संगीत को अपनाने की, सीखने की बात करती है तो जबान मूक तो होगी ही।

''क्या सोच रहे हैं आप?'' डायना ने अधीरतावश पूछा।

''जी?'' चंडीदास सकपका गया जैसे पकड़ा गया हो।

''मैं लॉर्ड कृष्ण को जानना चाहती हूँ। औरों के मुँह से उनके बारे में मैंने जो कुछ सुना है उसने मेरे मन में खलबली पैदा कर दी है। चंडीदास....मेरा मानना है कि इस विश्व का पूरा ज्ञान हमारे अपने भीतर मौजूद है लेकिन उसे देखने वाली हमारी आँखें बंद है। इन बंद आँखों को खोलने के लिए गुरु की जरूरत होती है। गुरु अपने ज्ञान दीप की लौ का प्रकाश दिखा हमें ज्ञान मार्ग के दर्शन कराते हैं।''

चंडीदास का मन हुआ वह इस विदुषी औरत का चरण स्पर्श कर ले, वह गद्गद् था- ''मैं उस सम्पूर्ण ज्ञान का कण भर भी नहीं जानता मैडम...बस एक शब्द जानता हूँ प्रेम.....प्रेम पूरे ब्रह्मांड में समाया है बल्कि प्रेम की विशालता को समो लेने में ब्रह्मांड भी छोटा है। प्रेम में बड़ी शक्ति है मैडम।''

डायना ने पहली बार चंडीदास के वचन सुने...कितनी मधुरता है इसकी वाणी में। वह अभिभूत थी-''और संगीत में?'' ''संगीत तो आत्मा है... प्रेम की आत्मा।''

डायना के हाथ जुड़ गए-''मुझे उस आत्मा के दर्शन करा दीजिए चंडीदास जी।''

विधिवत संगीत शिक्षा आरंभ हुई। डायना में स्वरों की पकड़ थी और चंडीदास के पास अथाह खजाना... अभ्यास अनवरत चालू था। सप्ताह में दो दिन मास्टर जसराज आते हिन्दी और संस्कृत सिखाने। डायना ने मास्टर जसराज के द्वारा निर्देशित की गई पुस्तकें खुद बाजार जाकर खरीद ली थीं। नई-नकोर किताबों पर हाथ फेरती डायना के आनन्द का ठिकाना न था। टॉम ब्लेयर जब टूर से लौटता तो इस आनन्द में थोड़ी रूकावट आ जाती क्योंकि चंडीदास और जसराज जल्दी क्लास खत्म कर देते। कभी-कभी शाम के झुटपुटे में ही जब बगीचे में झरी पत्तियाँ धीरे-धीरे तैरती हुई लॉन में बिखर जातीं....पोर्च की सीढ़ियों पर, बरामदे पर भी। कुछ पत्तियाँ मौलसिरी के पेड़ के नीचे रखी हुई बेंत की कुर्सियों के नीचे, आस-पास काँपती रहतीं। ये शिशिर ऋतु में झरी पत्तियाँ थीं जब जाड़ा पाला बनकर धरती की, बाग-बगीचों, खेतों की हरियाली को सहमा देता है और पत्तियाँ ठिठुर जाती हैं।

टॉम आसाम से लौट आया था। इस बार ज्यादा रहना पड़ा था उसे वहाँ। सुबह की हलकी धूप कोहरे की चादर चीरकर बगीचे के लॉन पर धब्बों में बिखर गई थी। बोनोमाली ने बेंत की कुर्सियों पर से ओस की बूँदें साफ कीं, गद्दियाँ लाकर रखीं और टेबल पर चाय की केतली टीकोजी से ढककर रख दी, साथ में बिस्किट और अखबार। धूप को सेंकते हुए डायना टॉम के साथ सुबह की चाय वहीं बैठकर पीती थी। प्याली में चाय ढाल बोनोमाली चला गया। टॉम ने प्याला उठाया-''कैसी चल रही है तुम्हारी प्रैक्टिस?'' डायना उत्साह से भर उठी-''मैं कड़ी मेहनत कर रही हूँ। मेरे पास वक्त कम है और... जसराज सर बता रहे थे कि भारतीय संगीत के ढेरों प्रकार हैं। कजरी, दादरा, ठुमरी, बिरहा, आल्हा ऊदल। शादियों में गाए जाने वाले बन्ना-बन्नी, शिशु जन्म पर सोहर, मंदिरों में भजन कीर्तन, सबद...''

टॉम लापरवाही से हँसा। चाय का घूँट भरा और सिर्फ एक शब्द ही सुन पाया हो जैसे-''डायना, यह देश हमारा गुलाम है फिर तुम जसराज के लिए सर शब्द का इस्तेमाल क्यों कर रही हो?''

डायना ने आहत हो टॉम की ओर देखा और एक ही घूँट में चाय खत्म कर कुर्सी से उठ खड़ी हुई।

''कहाँ जा रही हो?''

डायना ने दोबारा टॉम को देखा पर इस बार हिकारत से। टॉम से कुछ भी कहना अब उसके बस में न था। वह जान गई थी कि जीवन के सफर को तय करने के लिए उसने हमसफर ही गलत चुना... चुना नहीं, चुन दिया गया। उसके पिता ने टॉम में न जाने कौन सी अच्छाई देखी थी। टॉम उसके हुनर, उसकी भावनाओं के तो बिल्कुल भी योग्य नहीं।

टॉम की दुनिया छोटी-सी है जिसमें केवल धन के लिए अथाह मोह है और अपने मालिक होने का घमंड है। जबकि डायना की दुनिया विस्तृत है क्योंकि उसका मन जिज्ञासु है। जिज्ञासु मन की दुनिया बड़ी आकर्षक होती है लेकिन उतनी ही खतरों से भरी और उतनी ही तकलीफ देने वाली भी।

शाम का वक्त। हुगली नदी के मंथर जल पर तैरती पालदार नौकाएँ। शरमाया हुआ सूरज क्षितिज की मिलन रेखा पर अस्त होने को था। सारी धरती अनुराग से भर उठी थी....सिंदूरी छिटका अनुराग। डायना और चंडीदास नौका पर बैठे थे। गंगा की शांत लहरों पर नौका के चलते चप्पुओं की छपाक-छपाक ध्वनि के बीच मल्लाह द्वारा छेड़े भटियाली संगीत पर डायना मोहित थी। अब डायना और चंडीदास के बीच औपचारिकता नहीं रही थी। इतने दिनों से आमने सामने बैठकर संगीत सीखते सिखाते वे एक-दूसरे के करीब आ गए थे। कभी चंडीदास को आने में देर हो जाती तो डायना बगीचे में चहलकदमी करती हुई गेट की ओर टकटकी बाँधे निहारती रहती और चंडीदास भी जल्द से जल्द उसके पास पहुँच जाने के लिए उतावला हो उठता। दोनों में प्रेम के अंकुर ने पनपना शुरू कर दिया था।

''तुम सुन रहे हो चंडीदास....एक विचित्र संगीत की ध्वनियों के बीच से मैं गुजर रही हूँ। मेरे अंदर प्रेम की शक्ति समा रही है जैसे राधा ने किया था कृष्ण से प्रेम .....अद्वितीय प्रेम'' डायना की नीली आँखें प्रेम के गुलाबी डोरे, उसकी आँखों के सम्मोहन को दुगना बना रहे थे। धीरे-धीरे अंधेरा घिरने लगा था और हुगली के तट पर बत्तियाँ टिमटिमा उठी थीं। मल्लाह इंतजार में था कि मालिक का हुक्म हो तो लौटें। लेकिन डायना और चंडीदास को होश कहाँ था ?प्रेम के चुम्बक में वे खिंचे चले जा रहे थे।चँडीदास ने डायना की भीगी हथेलियाँ अपनी हथेलियों में भरकर उसके करीब मुँह लाकर कहा-''मैं तुम्हें प्यार करने लगा हूँ डायना।'' डायना सिहर उठी। उसने घबराकर चंडीदास के होठों पर अपनी हथेली रख दी और फुसफुसाई-''कुछ मत कहो.....केवल सुनो.....हवाओं के स्वर, लहरों से पतवार के टकराने के स्वर चंडी.....प्रेम को जबान नहीं चाहिए। मैं तुम्हारी हूँ....हमेशा तुम्हारी ही रहूँगी। पर कहकर इस पल को हलका मत करो।''

चंडीदास ने डायना के कंधे पर सिर टिका दिया। इशारा पाते ही मल्लाह ने किनारे की ओर नौका खेनी शुरू कर दी। हुगली की लहरें काली हो चुकी थीं और उन पर सितारे टंक चुके थे। चंडीदास ने डायना को फिटन में बिठा दिया था जो रात की तफरीह के लिए निकले लोगों की चहल-पहल से भरी सड़क पर दौड़ पड़ी थी।

चंडीदास अकेला ही हुगली के किनारे चहल-कदमी करता रहा। देश एक क्रांतिकारी, जोशीले दौर से गुजर रहा था। अंग्रेज अब फूटी आँख नहीं सुहा रहे थे। ऐसे में एक अंग्रेज युवती को दिल दे बैठना....पर प्रेम व्यापार तो नहीं जो ठोक बजा कर किया जाए। चंडीदास क्या करे, उसका अपने दिल पर वश नहीं.....वह अपनी सम्पूर्ण ताकत से डायना की ओर उसे खींचे लिए जाता है। चंडीदास के मन में भी क्रांति की ज्वाला भड़कती है, देश के लिए कुछ कर गुजरने की चाह सिर उठाती है, पर अपने बूढ़े, असहाय माँ-बाप को वह कैसे बेसहारा छोड़ दे? उसे कुछ हो गया तो उन्हें कौन सँभालेगा? इन्हीं विचारों के मंथन से गुजर रहा था वह कि सामने से जसराज आते दिखाई दिए।

''अरे, मास्टरजी आप यहाँ?'' चंडीदास ने उन्हें प्रणाम करते हुए कहा। वे उम्र में चंडीदास से काफी बड़े थे और स्कूल में अध्यापन करते हुए अगले वर्ष रिटायर होने वाले थे।

''चंडीदास मिसेज ब्लेयर तो बड़ी विदुषी महिला हैं। इतनी जल्दी हिन्दी और संस्कृत का ज्ञान हो गया है उन्हें कि मैं तो आश्चर्यचकित हूँ।''